

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : लोक-संस्कृति और जीवन दर्शन

जन्माष्टमी के दिन हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों ही अंचलों में व्रत रखने की एक अत्यंत कठोर और पवित्र लोक परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्रद्धालु दिनभर निर्जला या फलाहारी व्रत का संकल्प लेते हैं और जैसे-जैसे भादों की अंधेरी रात में मध्यरात्रि के बारह बजने का समय करीब आता है, हर घर और मंदिर में एक अलौकिक प्रतीक्षा का भाव छा जाता है।



पर्व

आँचल शर्मा

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब वर्षा ऋतु अपने चरम पर होती है और हरियाली से धरती का कोना-कोना खिल उठता है, तब हरियाणा का जनमानस एक अद्भुत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उल्लास में डूब जाता है। हरियाणा में योगेश्वर की उपासना का समय आता है, जिसने इस पावन भूमि को केवल एक ऐतिहासिक युद्धभूमि नहीं, बल्कि धर्मभूमि का अमर गौरव प्रदान किया। जन्माष्टमी का यह पर्व हरियाणा के लिए केवल एक देवता के जन्म का उत्सव नहीं है, बल्कि यह उस महान मार्गदर्शक के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है, जिसने कुरुक्षेत्र की माटी को पूरे विश्व के लिए ज्ञान, दर्शन और निष्काम कर्म का शाश्वत केंद्र बना दिया।हरियाणा के लोक-जीवन और सांस्कृतिक जड़ों में श्रीकृष्ण की उपस्थिति को देखते हैं तो वह अत्यंत सहज और आत्मीय प्रतीत होती है।

हरियाणा की लोक-संस्कृति, साहित्य और संगीत में कृष्ण कथाओं का अत्यंत प्रामाणिक और



समुद्ध इतिहास रा गया है। प्रदेश की सबसे सशक्त लोक नाट्य शैली—सांग और रागिनी परंपरा में कृष्ण के जीवन प्रसंगों, कुरुक्षेत्र के युद्ध और गीता के उपदेश का बहुत ही मार्मिक वर्णन मिलता है। पंडित लखमीचंद, बाजे भगत और मांगे राम जैसे महान लोक-कवियों की समृद्ध वाचिक परंपरा ने अपनी रागनियों के माध्यम से श्रीकृष्ण की लीलाओं और गीता के दार्शनिक ज्ञान को जन-जन की भाषा में ढालकर ग्रामीण चौपालों तक पहुंचाया है। हरियाणा की इसी सांग-परंपरा की एक अत्यंत लोकप्रिय और ओजस्वी रागिनी में गीता के उपदेश का सार बहुत ही सीधे शब्दों में गाते हुए कहा गया है कि 'बाजे शंख नगाड़े भारी कुरुक्षेत्र के मैदान में, कृष्ण जी ने गीता गाई अर्जुन के सुध ज्ञान में।' जब ग्रामीण मंचों पर लोक-कलाकार इन रागनियों को पूरी तल्लीनता से गाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो कृष्ण कोई दूरस्थ देवता नहीं, बल्कि हरियाणा की इसी धरती पर खड़े एक जीवंत मार्गदर्शक हों।लोक-साहित्य की वास्तविक आत्मा उसकी इसी वाचिक परंपरा में निवास करती है, जहां किसी रचना की प्रामाणिकता मुद्रित पृष्ठों से नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही सामूहिक श्रुति-स्मृति से सिद्ध होती है। इसी निर्बाध प्रवाह में, हरियाणा के ग्रामीण अंचलों, विशेषकर बांगर

और खादर क्षेत्रों के रतजगों में, जन्माष्टमी के अवसर पर महिलाओं द्वारा समवेत स्वर में गाए जाने वाले 'जकड़ी', 'पंगट' और 'सोहर' गीत इस वाचिक परंपरा के सबसे प्रामाणिक साक्ष्य बनकर उभरते हैं। इन जकड़ियों में पौराणिक प्रामाणिकता को और अधिक पुष्ट करते हैं।हरियाणावी लोक-दर्शन की एक और बड़ी विशिष्टता ईश्वर के साथ स्थापित होने वाला 'सखा भाव' है, जो माखन चोरी और उलाहना जकड़ियों में बड़ी प्रखरता से मुखर होता है। इन उलाहना गीतों में गोपियां कृष्ण की नटखट हरकतों की शिकायत करते हुए पूरी निश्छलता से गाती हैं: *काली कमली आळा मेरा, मन हर के लेंगा री। मैं तो गई थी जमुना जल भरण नै, मेरी मटक की फोड़ के लेया री। सासरिये में सुगै सास मेरी, मैं तो हो गई आण-निताणी री।* इन पंक्तियों में सास के तानों का भय और 'आण-निताणी' (असहाय) होने का जो भोलापन झलकता है, वह हरियाणावी ग्रामीण परिवेश के सहज मनोविज्ञान को दर्शाता है। ये उलाहना जकड़ियां रास-गीतों के साथ-साथ जन्माष्टमी के जगणियों का अभिनंग रही हैं। इन जकड़ियों के रचयिता भले ही पूर्णतः अज्ञात हों, परंतु 'आळा', 'ल्याय', 'चालैं' जैसी ठेठ क्षेत्रीय शब्दावली ही इनकी वास्तविक कसौटी है। ये किसी आधुनिक

मंदिर दो और मूर्ति एक

झज्जर जिले के बेरी कस्बा में दो मंदिर हैं और इनमें रखी जाने वाली माता भीमेश्वरी देवी की मूर्ति एक ही है। बताते हैं कि प्रारंभ में इस जगह पर घना जंगल था। इसमें ऋषि दुर्वासा रह रहे थे। ऋषि दुर्वासा रोजाना सुबह माता भीमेश्वरी देवी की मूर्ति को बाहरी मंदिर में लाते और दोपहर बाद मूर्ति को भीतरी मंदिर में रख देते थे। मूर्ति को आंतरिक मंदिर से बाहरी मंदिर तक ले जाने की यह प्रक्रिया अभी भी धार्मिक रूप से पालन की जा रही है।

जन्माष्टमी पर हरियाणा के घरों में खीरे को काटकर उसमें से बाल कृष्ण की मूर्ति को प्रतीकात्मक रूप से जन्म दिलाने की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है, जिसे लोक-विश्वास में 'नाल छेदन' का प्रतीक माना जाता है।

गीतकार की बंद कमरे में रची गई कविताएं नहीं हैं, अपितु ये हरियाणा की मिट्टी से उपजी वे ध्वनियां हैं, जिन्होंने भगवान को स्वर्ग के सिंहासन से उतारकर सीधे गांव की चौपाल और घर के आंगन का हिस्सा बना दिया है। व्रत और अनुष्ठानों की दृष्टि से देखा जाए तो, जन्माष्टमी के दिन हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों ही अंचलों में व्रत रखने की एक अत्यंत कठोर और पवित्र लोक परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्रद्धालु दिन भर निर्जला या फलाहारी व्रत का संकल्प लेते हैं और जैसे-जैसे भादों की अंधेरी रात में मध्यरात्रि के बारह बजने का समय करीब आता है, हर घर और मंदिर में एक अलौकिक प्रतीक्षा का भाव छा जाता है। जैसे ही चांद निकलता है तो शंखों की ध्वनि और नगाड़ों की गूंज के साथ वतावरण 'नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की' के जयकारों से भर उठता है। इस जन्म के अवसर पर हरियाणा के घरों में खीरे को काटकर उसमें से बाल कृष्ण की मूर्ति को प्रतीकात्मक रूप से जन्म दिलाने की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है, जिसे लोक-विश्वास में 'नाल छेदन' का प्रतीक माना जाता है। जन्म के तुरंत पश्चात बालगोपाल का पंचामृत से पवित्र अभिषेक कराया जाता है और उद्धे नंद रेशमी वस्त्र पहनाकर श्रद्धापूर्वक झुला झुलाया जाता है। चूंकि कृष्ण को गोपाल कहा जाता है और हरियाणा मूलतः पशुपालकों का प्रदेश है, इसलिए जन्माष्टमी पर यहां के खान-पान और भगवान के नैवेद्य में विशेष शुद्धता और देसी स्वाद झलकता है। ताजी मथी हुई छाछ से निकले सफेद मक्खन, मिश्री, देसी घी के चूरमे, धनिया के

पंजीरी और दूध को कढ़ाकर बनाए गए पेड़े विशेष रूप से अर्पित किए जाते हैं। इसके साथ ही, लोक-विश्वास के अंतर्गत इस दिन गोसेवा का विशेष विधान है, जहां लोग अपनी गायों को स्वच्छ जल से नहलाकर सजाते हैं, हरा चारा खिलाते हैं और माथे पर रोली का तिलक लगाकर आरती उतारते हैं। प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण इस पर्व के स्वरूप में भी थोड़ी भिन्नता दिखाई देती है। हरियाणा के दक्षिणी हिस्से, विशेषकर पलवल, होडल, फरीदाबाद और नूंह के जो क्षेत्र ब्रज भूमि से सटे हुए हैं, वहां रासलीला मंडलियों और ब्रज शैली के कीर्तनों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। इसके विपरीत, चूंकि भगवान कृष्ण को एक महान मल्ल भी माना जाता है, इसलिए फरीदाबाद के धारिण जैसे कई गांवों में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विशेष मेलों और कुश्ती के दंगलों का आयोजन किया जाता है। हरियाणा में कृष्ण और जन्माष्टमी की चर्चा कुरुक्षेत्र के बिना सर्वथा अधूरी है। यह केवल एक भौगोलिक स्थान मात्र नहीं है, बल्कि यह मानव के आत्मसंघर्ष की वह भूमि है, जहां मनुष्य अपने कर्तव्य और सांसारिक मोह के बीच खड़ा होता है। कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में उसी ऐतिहासिक अक्षय वट के नीचे जन्माष्टमी पर विशेष आध्यात्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। यहां कृष्ण केवल जलशयोकी के नंदलाल नहीं रहते, बल्कि वे एक गंभीर योगेश्वर के रूप में पूजे जाते हैं। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया कर्म का यह संदेश हरियाणा के मेहनतकश समाज के जीवन-दर्शन से हृबहू मेल खाता है। मौसम की परवाह किए बिना खेत में पसीना बहाने वाला किसान हो या देश की सीमाओं पर डटा हरियाणा का जवान, निष्काम कर्म की जो भावना गीता में बताई गई है, वह हरियाणावी जनमानस के स्वभाव में प्राकृतिक रूप से रची-बसी है। जब किसी गांव की चौपाल से कृष्ण की रागनी की कोई पुरानी तान सुनाई देती है या जब कोई महिला अपने घर के आंगन में कान्हा की छठी के गीत गाती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि हजारों वर्ष पुरानी वह अलौकिक कथा आज भी हरियाणा की मिट्टी में सांस ले रही है। हरियाणा में श्रीकृष्ण केवल भगवान नहीं हैं, वे इस प्रदेश की आत्मा में रचे-बसे एक शाश्वत मार्गदर्शक हैं।

ग़ज़ल	कर्मचंद केसर
कुछ ना सै	
	
गन्दा - मन्दा फूहड़ गाणा कुछ ना सै। लय सुर ताल बिना मुँह बाणा कुछ ना सै। मतलब खातर हाथ मिल्याणा कुछ ना सै। अपणी बोर - बड़याई गाणा कुछ ना सै। रिश्तेदारी हो सै प्यारी बरतण की, बात-बात पै खूँड बजाणा कुछ ना सै। सुलफा गाँऊजा मॉंग धतूरा फीम बुरी, दारु का बी पीणा-प्याणा कुछ ना सै। बटळी करले चै कितनी धन-माया तौ, उरियो रहजै गेल्लै जाणा कुछ ना सै। बाँगगे-बोलेते च्यार डोंकले लिखकै बस, अखबारों में नाम छपाणा कुछ ना सै। फास्ट फूड अर् लटरम-पटरम खावै लोग, होटल का बी ताजा खाणा कुछ ना सै। चाल-चलन में खोट मगन मोह माया में, सिर टोप्पी चै भगवों बाणा कुछ ना सै। जूत लगैं अर मिलैं मित्र्याई खावण नैं, केसर इसी जगों पै जाणा कुछ ना सै।	

ग़ज़ल	रामफल गोड
मान मरै सै	
	
जिस माणस का मान मरै सै। जिन्दा ओ इनसान मरै सै। बेदोस्सी नै सजा मिलै तो, न्यूँ समझो संविधान मरै सै। मात पिता हों मरै बराब्बर, जिनका पूत जवान मरै सै। खड़जंग माट्ठे सै जिस घर म्हं, बच्च्यों की मुस्कान मरै सै। ओ जिन्दा बी मरै बराब्बर, जिसका दीन ईमान मरै सै। खेत रोवते बिलख बिलख जिव, तंगवी भोग किसान मरै सै। जात धरम पै कतल हुवै जिव, मणसपणे कां ग्यान मरै सै। खतम हुवै सै वा संसकिरती, जिसकी मूल जबांन मरै सै। मोत मणस की इब न्यूँ रामफल, सरइक पै ज्यूँ स्वान मरै सै।	

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

बालपन

आनंद को खोजने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं, वह हमारे अतीत की किसी 'खोही' में भी छिपा हो सकता है

याद आता है बचपन की 'खोही' और बारिश में भीगा हुआ आनंद

लोकजीवन

रवि यादव

भले ही आज जमाना बहुत बदल गया है, सुविधाएं बढ़ गई हैं और जीवन की रफ्तार पहले से कहीं तेज हो गई है, लेकिन बचपन की कुछ यादें ऐसी होती हैं, जो समय के साथ धुंधली नहीं पड़ती। वे अचानक किसी दृश्य, किसी वस्तु, किसी खुशबू या बारिश की किसी बूंद के साथ फिर से हमारे सामने आ खड़ी होती हैं। ऐसी ही एक याद है - हमारे बचपन की 'खोही' या 'खोली'। आज की पीढ़ी शायद इस शब्द से परिचित न हो, लेकिन हमारे जैसे लोगों के लिए 'खोही' केवल सुतली से बनी बोरी नहीं थी और न ही प्लास्टिक से बना खाद का कट्टा था। वह खोही हमारे बचपन का हिस्सा थी, हमारी शरातों की साथी थी और कभी-कभी तो हमारे लिए छतरी का काम भी करती थी। मुझे आज भी याद है कि हमारे स्कूलों में उस समय टाट-पट्टी पर्याप्त संख्या में नहीं हुआ करती थी। इसलिए हम घर से सुतली से बनी बोरी या प्लास्टिक का कट्टा लेकर स्कूल जाया करते थे। स्कूल पहुंचते ही सबसे पहला काम होता था अपनी परांद की जगह तयशाना। जैसे ही जगह मिलती, हम अपनी बोरी वहां बिछा देते और उस पर अपना बस्ता रख देते थे। धीरे-धीरे वह जगह हमारे लिए किसी छोटे से 'प्लाट' की तरह हो जाती थी। मन में एक अदृश्य बोर्ड टंगा होता था - "यह मेरी जगह है, यहां कोई नहीं बैठेगा।" अगर कोई

दूसरा बच्चा हमारी जगह पर बैठ जाता तो मामला लगभग जमीन के विवाद जैसा ही जाता था। देरती अपनी जगह थी, लेकिन अपनी बोरी और अपनी जगह की हिफाजत उससे भी बड़ी जिम्मेदारी हुआ करती थी। उस समय हमारे पास आज जैसी सुविधाएं नहीं थीं,

लेकिन सुविधाएं बहुत थीं। साधन सीमित थे, मगर कल्पनाएं असीमित थीं। एक साधारण बोरी भी कभी बैठने की चटाई बन जाती थी, कभी सामान रखने की जगह और बारिश आ जाए तो वही बोरी खोही के रूप में हमारे सिर का ताज बन जाती थी। हमारे अहीरवाला क्षेत्र में इसे 'खोही' कहा जाता था। अलग-अलग क्षेत्रों में इसके अलग-अलग नाम रहे होंगे। यही तो हमारे देश की खुबसूरती है कि एक ही वस्तु अलग-अलग इलाकों में अलग नाम और अलग स्मृतियों के साथ जीवित रहती है। किसी के लिए यह बोरी होगी, किसी के लिए कट्टा, किसी के लिए कोई और स्थानीय नाम - लेकिन इससे जुड़ी बचपन की भावनाएं शायद लगभग एक जैसी ही होंगी। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखा हूँ तो लगता है कि उस दौर में हमारे पास चीजें कम थीं, लेकिन उन्हें आनंद में बदलने की कला खूब थी। एक छोटी-सी चीज में खेल दूँद लेना, बारिश में भीगना, मिट्टी में पैर सानना, देरती के साथ हँसना और मामूली-सी चीज को भी खास बना देना, शायद यही बचपन था।

आज का दिन भी मेरे लिए कुछ ऐसा ही रहा। बारिश हो रही थी। छतरी घर में रखी थी और मैं उसे लेकर निकल सकता था, लेकिन मन ने कहा कि आज बारिश को महसूस किया जाए। आज खुशियाँ से उन्माद आनंद चाहिए था। और जब आनंद की बात आती है तो बचपन अपने आप सामने आ जाता है। नजर पड़ी एक चूरी के कट्टे पर। अचानक बचपन की वही 'खोही' याद आ गई। मैंने उसी अवेजान में उसे तैयार किया, जैसे बचपन में खोही घर पर रखकर बारिश से बचा करते थे। कुछ ही क्षणों में वह कट्टा मेरे सिर पर आ और मैं बारिश के बीच चल रहा था। उस पल लगा जैसे उस ने कुछ देर के लिए पीछे लौटने का रास्ता खोल दिया हो। चहरे पर बारिश की बूंदें थीं, लेकिन मन में बचपन की हंसी थी। आपस आपस आधुनिक दुनिया थी, लेकिन भीतर वही पुराना स्कूल, वही बोरी, वही अपनी जगह और वही देरती की आवाजें थीं। कभी-कभी जिंदगी में आनंद पाने के लिए बड़ी चीजों की जरूरत नहीं होती।

एक साधारण बोरी भी कभी बैठने की चटाई बन जाती थी, कभी सामान रखने की जगह और बारिश आ जाए तो वही बोरी खोही के रूप में हमारे सिर का ताज बन जाती थी।

महंशे साधन, बड़े पर्यटन स्थल या शानदार व्यवस्थाएं ही खुशी का कारण नहीं हैं। आनंद तो हमारे आपसपास बिखरा पड़ा है, बस उसे देखने वाली नजर चाहिए। एक पुरानी बोरी हमें बचपन में पहुंचा सकती है, बारिश की कुछ बूंदें पुरानी गलियों की याद दिला सकती हैं और कोई भूली-बिसरी वस्तु हमें उन लोगों तक ले जा सकती है, जिनके साथ हमने जीवन के सबसे सुंदर दिन बिताए थे। आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में शायद हमें फिर से उसी बच्चे की जरूरत है, जो छोटी-सी चीज में बड़ी खुशी खोज लेता था। इसलिए अपनी पुरानी यादों को केवल याद मत कीजिए, कभी-कभी उन्हें जी भी लीजिए। बारिश हो तो भीगिए, मिट्टी की खुशबू महसूस कीजिए, बचपन की कोई वस्तु हाथ में उठाइए और अपने भीतर छिपे उस बच्चे से मिलिए, जो आज भी कहीं न कहीं आपका इंतजार कर रहा है। आनंद को खोजने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं है। वह हमारे अतीत की किसी 'खोही' में भी छिपा हो सकता है। बस जरूरत है, उसे पहचानने की। आनंद दूँदते रहिए और आनंदित रहिए।

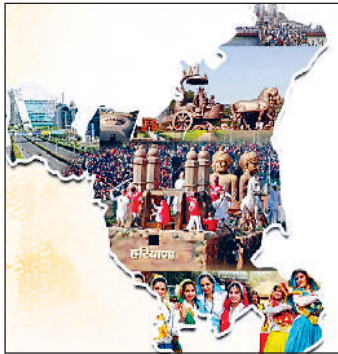
हरियाणावी का संस्कृत और वैदिक साहित्य से गहरा नाता



कलाकार

अंकुर शर्मा

हरियाणा केवल भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास का ही नहीं, बल्कि उसकी प्राचीन भाषिक परंपरा का भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित यह क्षेत्र वैदिक सभ्यता की प्रमुख कर्मभूमि माना जाता है। अनेक विद्वानों का मत है कि ऋग्वेद सहित वैदिक साहित्य के अनेक मंत्रों की रचना इसी सांस्कृतिक परिवेश में हुई। यही कारण है कि हरियाणा की लोकभाषा और उसकी विभिन्न बोलियों में आज भी प्राचीन भारतीय भाषिक परंपरा की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। बांगरू, अहीरवाटी, बागड़ी, कौरवी तथा मेवाती जैसी बोलियाँ केवल ग्रामीण संप्रेषण का माध्यम नहीं हैं, बल्कि भारतीय भाषाओं के विकासक्रम की जीवंत कड़ियाँ भी हैं। भाषावैज्ञानिकों के अनुसार हरियाणवी बोलियाँ मुख्यतः शीरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिंदी समूह की सदस्य हैं। यह वही भाषिक क्षेत्र है जिसने आगे चलकर खड़ी बोली, बज्ज, कन्नौजी तथा हरियाणवी जैसी बोलियों को जन्म दिया। इसलिए हरियाणवी और संस्कृत का संबंध प्रत्यक्ष न होकर एक दीर्घ भाषिक परंपरा के माध्यम से स्थापित होता है। इस दृष्टि से हरियाणवी में संस्कृत की अनेक ध्वनियाँ, शब्द, व्याकरणिक संरचनाएं तथा सांस्कृतिक



अभिव्यक्तियाँ आज भी सुरक्षित दिखाई देती हैं। ध्वन्यात्मक स्तर पर हरियाणावी अनेक प्राचीन विशेषताओं को संरक्षित किए हुए है। उदाहरण के लिए संस्कृत के मूह्र्ध्व 'ण' का प्रयोग हरियाणवी में आज भी व्यापक रूप से मिलता है। जहाँ मानक हिंदी में अनेक स्थानों पर 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग होने लगा है, वहीं हरियाणवी में पाणी, माणस, घणा, बाणी जैसे शब्द सहज रूप से बोले जाते हैं। यह विशेषता प्राचीन संस्कृत तथा शीरसेनी परंपरा की स्मृति को जीवित रखती है। इसी प्रकार कुछ स्थानों पर संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण और ध्वनि-संरचना में भी प्राचीन भाषिक प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखाई देता है। शब्द-संपदा की दृष्टि से भी हरियाणवी अत्यंत समृद्ध है। ग्रामीण जीवन में आज भी अनेक ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनकी जड़ें संस्कृत में मिलती हैं। उदाहरणस्वरूप 'गोधूम' से 'गेहूँ', 'क्षेत्र' से 'खेत', 'दुग्ध' से 'दूध', 'धुत' से 'घी',

'क्षाम' से 'भाई', 'पितृ' से 'पितर' तथा 'मातृ' से 'माता' जैसे शब्द भाषिक निरंतरता के सशक्त उदाहरण हैं। इन शब्दों का उच्चारण समय के साथ सरल अवश्य हुआ है, किंतु उनका मूल संस्कृत से जुड़ा हुआ है। यह परिवर्तन भाषा की स्वाभाविक विकास प्रक्रिया का परिणाम है, न कि उसके मूल स्वरूप के लोप का। व्याकरणिक स्तर पर भी हरियाणवी में अनेक ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं जो उसे प्राचीन भारतीय भाषिक परंपरा से जोड़ती हैं। अनेक क्रियाएँ और धातु-आधारित शब्द संस्कृत से विकसित रूपों में आज भी प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए 'करना' का संबंध संस्कृत की 'कृ' धातु तथा 'जाना' का संबंध 'गम्' धातु से माना जाता है। यद्यपि इनका वर्तमान रूप प्राकृत और अपभ्रंश के विभिन्न चरणों से होकर विकसित हुआ है, फिर भी इनके मूल स्रोत संस्कृत में निहित हैं। यही भाषिक निरंतरता हरियाणवी की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित करती है। हरियाणा की विभिन्न बोलियों में संस्कृत के प्रभाव का स्वरूप भी अलग-अलग दिखाई देता है। मध्य हरियाणा की बांगरू बोली अपेक्षाकृत संतुलित और व्यापक रूप से प्रचलित है। दक्षिण हरियाणा की अहीरवाटी में राजस्थानी प्रभाव के साथ संस्कृत मूल के अनेक शब्द सुरक्षित हैं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की कौरवी बोली में संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण तथा ध्वनि-बल की विशेष प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार पश्चिमी हरियाणा की बागड़ी और दक्षिणी क्षेत्र की मेवाती में भी स्थानीय प्रभावों के साथ संस्कृत-प्राकृत परंपरा की अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं।

कभी सरस्वती के तट पर गूंजने वाली वैदिक वाणी की प्रतिध्वनि आज भी हरियाणा के खेतों, चौपालों, लोकगीतों और रागनियों में अनुभव की जा सकती है।

इससे स्पष्ट होता है कि हरियाणा की प्रत्येक बोली भारतीय आर्य भाषाओं के विकासक्रम का अपना विशिष्ट स्वरूप प्रस्तुत करती है। हरियाणवी का संस्कृत से संबंध केवल भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक स्तर पर भी अत्यंत गहरा है। वेदों और उपनिषदों में वर्णित प्रकृति के प्रति सम्मान, श्रम की महिमा, सत्य, कर्तव्य, पारिवारिक मर्यादा तथा लोककल्याण की भावना हरियाणा के लोकजीवन में आज भी स्पष्ट दिखाई देती है।लोकगीतों, रागनियों, सांग साहित्य, कहावतों और मुहावरों में इन जीवन मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। अनेक लोककथाएँ और लोकविश्वास भारतीय दार्शनिक परंपरा की स्मृतियों को सरल लोकभाषा में संजोए हुए हैं। हरियाणा के सांग साहित्य और लोककवियों की रचनाओं में कर्म, धर्म, लोकमंत्रल और ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण जैने भाव-बार-बार व्यक्त होते हैं। ये वही मूल्य हैं जिनका उल्लेख वैदिक तथा उत्तरवैदिक साहित्य में मिलता है। ग्रामीण समाज में प्रचलित अनेक लोकोक्तियाँ अनुभवजन्य ज्ञान का

ऐसा रूप प्रस्तुत करती हैं, जिनमें भारतीय दार्शनिक चिंतन की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। इस प्रकार हरियाणवी लोकसंस्कृति प्राचीन भारतीय ज्ञानपरंपरा की सशक्त वाहक सिद्ध होती है। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि भाषाओं का विकास निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया है। इसलिए हरियाणवी को संस्कृत की प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी कहना भाषावैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः उचित नहीं होगा। अधिक सटीक यह कहना होगा कि हरियाणवी भारतीय आर्य भाषाओं की उस दीर्घ विकास-शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसकी प्रारंभिक आधारभूमि वैदिक संस्कृत रही है। इसीलिए हरियाणवी में संस्कृत के अनेक ध्वन्यात्मक, शब्दगत, व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक तत्त्व आज भी सुरक्षित दिखाई देते हैं। निरसंदेह हरियाणा की क्षेत्रीय बोलिया अग्ने भीतर एक गौरवशाली भाषिक और सांस्कृतिक इतिहास समेटे हुए हैं। उनका शब्द-भंडार, उच्चारण, व्याकरण तथा लोकसाहित्य भारतीय भाषाओं की प्राचीन परंपरा से उनके गहरे संबंध का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। कभी सरस्वती के तट पर गूंजने वाली वैदिक वाणी की प्रतिध्वनि आज भी हरियाणा के खेतों, चौपालों, लोकगीतों और रागनियों में अनुभव की जा सकती है। यही कारण है कि हरियाणवी बोलियों को केवल क्षेत्रीय बोली मानकर सीमित कर देना उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व का उचित मूल्यांकन नहीं होगा। वे भारतीय भाषिक विरासत की अमूल्य धरोहर हैं और हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की सशक्त संरक्षक भी।

खबर संक्षेप

नलियां जाम, गलियों में भरा गंदा पानी

आदमपुर। यहां के जवाहर नगर की कई गलियों में पिछले कई महीनों से सीवरेज व्यवस्था ठप होने के कारण लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सीवरेज का गंदा पानी गलियों के साथ-साथ कई बार घरों के आगे और अंदर तक जमा हो जाता है। गंदे पानी से उठने वाली दुर्गंध और मच्छरों की भरमार के कारण लोगों में बीमारियां फैलने का खतरा बना हुआ है। जवाहर नगर के पंच रेखा, पंच गायत्री देवी, पंच सुनील कुमार, पंच प्रकाश, राजबाला और पिंकी ने बताया कि सीवरेज का पानी लंबे समय से गलियों में जमा है। पानी से इतनी दुर्गंध आती है कि लोगों का घरों में रहना मुश्किल हो गया है। कई बार गंदा पानी घरों में भी घुस जाता है, जिससे खाने-पीने और दैनिक कार्यों में परेशानी होती है। लोगों का आरोप है कि समस्या को लेकर कई बार जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से शिकायत की गई, लेकिन कोई स्थायी समाधान नहीं हुआ।

यातायात नियम तोड़ने वालों के काटे चालान

हिसार। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ जिला पुलिस ने सख्त कार्रवाई करते हुए टोल प्लाजा पर विशेष चेंकिंग अभियान चलाया। इंटरसेप्टर प्रभारी उप निरीक्षक कुलदीप सिंह के नेतृत्व में टीम ने वाहनों की जांच की और नियमों की अनदेखी करने वाले चालकों के चालान किए। चेंकिंग के दौरान एक बलैने को कार पर प्रतिबंधित जेड ब्लैक फिल्म लगी मिली। इसके अलावा चालक के पास ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं था। पुलिस ने दोनों उल्लंघनों के आधार पर 15 हजार रुपये का चालान किया। वहीं, एक थार वाहन पर जेड ब्लैक फिल्म लगी पाए जाने पर 10 हजार रुपये का चालान किया गया। पुलिस टीम ने एक अन्य कार में अनधिकृत लाल-नीली लाइटें लगी पाए जाने पर कार्रवाई की। इसके अलावा शराब पीकर वाहन चलाने वाले एक चालक के खिलाफ भी नियमानुसार चालान किया गया। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन का कहना है कि वाहनों पर प्रतिबंधित ब्लैक फिल्म लगाना, अनधिकृत लाल-नीली बत्तियों का इस्तेमाल करना और शराब के नशे में वाहन चलाना खतरनाक है।

देवी लाल मार्केट की बदली तस्वीर 40 लाख रुपये से हुआ सौंदर्यीकरण



हांसी। शहर की प्रमुख देवी लाल मार्केट का करीब 40 लाख रुपये की लागत से सौंदर्यीकरण किया गया है। विधायक विनोद भगाने ने रविवार को विकास कार्यों का उद्घाटन किया। लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी होने पर दुकानदारों ने मिठाई बांटकर व पटाखे फोड़कर खुशी जताई। सौंदर्यीकरण के तहत रंगीन ब्लॉक से फुटपाथ, आधुनिक लाइटिंग, बेनाइट से सीढ़ियों की सजावट, तोरण द्वार की तर्ज पर दो आकर्षक प्रवेश द्वार, व्यवस्थित पार्किंग, हरित पट्टी और पूरे बाजार में सीसी फर्श का निर्माण कराया गया है। सीढ़ियों पर बाइक चढ़ने से रोकने के लिए स्टील बोर्डिंग भी लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में शहर के बाजारों, सड़कों, पार्कों और सार्वजनिक स्थलों का और विकास किया जाएगा। इस अवसर नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी राजेंद्र सोनी ने कहा कि सौंदर्यीकरण से बाजार का स्वरूप निखरा है तथा दुकानदारों व ग्राहकों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। इस दौरान नगर परिषद प्रधान प्रवीण इलावादी, उपप्रधान अजित बंसल सहित गणमान्य मौजूद थे।

रंग-बिरंगी वर्ली आर्ट से बड़ेगी अंडरपास की दीवारों की शोभा

हरिभूमि न्यूज

शहर के सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ, सुंदर और हरा-भरा बनाने की मुहिम के तहत रविवार को 'हमारा प्यार हिसार' एवं 'ग्रीन हिसार फिट हिसार' के संयुक्त तत्वावधान में सूर्य नगर अंडरपास में पेंटिंग और पौधारोपण गतिविधि आयोजित की गई। अभियान के दौरान अंडरपास की दीवारों की सफाई के साथ-साथ ओवरब्रिज के नीचे लगाए गए पौधों की देखभाल भी की गई। अभियान की शुरुआत सूर्य नगर अंडरपास की दीवारों को पानी से अच्छी तरह धोकर साफ करने से हुई। इसके बाद दीवारों पर व्हाइट बेस तैयार किया गया। अभियान से जुड़े सदस्यों ने बताया कि आने वाले दिनों में इन दीवारों पर रंग-बिरंगी वर्ली आर्ट बनाई जाएगी। इससे अंडरपास को न केवल आकर्षक स्वरूप मिलेगा, बल्कि सार्वजनिक स्थान पर कलात्मकता का भी समावेश होगा। इसके बाद दोनों टीमों के सदस्यों ने



हिसार। सफाई अभियान में लगे हमारा प्यार हिसार के सदस्य।

पिछले महीने सूर्य नगर ओवरब्रिज के नीचे लगाए गए पौधों की निराई-गुड़ाई की और उन्हें पानी दिया। इस दौरान खराब हो चुके पौधों को हटाकर उनकी जगह नए पौधे लगाए गए। सदस्यों ने कहा कि केवल पौधारोपण करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी नियमित देखभाल और संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। अभियान से जुड़े सदस्यों ने कहा कि सूर्य नगर अंडरपास और ओवरब्रिज के आसपास पेंटिंग और हरियाली का यह संयोजन क्षेत्र की तस्वीर बदलने में मदद करेगा। आने वाले दिनों में दीवारों पर आकर्षक चित्रकारी के साथ क्षेत्र में हरियाली को भी बढ़ावा दिया जाएगा। उन्होंने

वे रहे मौजूद

इस अवसर पर 'हमारा प्यार हिसार' की ओर से एसके गर्ग, हरेश माटिया, कमल माटिया, एसएस मलिक, आदेश मलिक, राजनीर दुहान, जितेंद्र बंसल, गगन मेहता, डॉ. विजय काटियावा, मनीष पुनिया, सत्येंद्र यदुवंशी, सुमन, मधु, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राजेंद्र वर्मा, नीलम सेनी और माविका सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे। 'ग्रीन हिसार फिट हिसार' की ओर से डॉ. रमेश माटी, कृष्ण शर्मा, जय भगवान शर्मा, तरसेम, कपिल सेनी, विराग, रवि वर्मा, चंद्रकांत, जितेंद्र सिंह और मलिक सिंह सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। कहा कि शहर के अन्य सार्वजनिक स्थानों को भी स्वच्छ, सुंदर और हरा-भरा बनाने के प्रयास जारी रहेंगे।

हिसार

कौशिक नगर में गुरु रविदास मंदिर व लाइब्रेरी की नींव रखी, भागो देवी ने दिए 2.51 लाख

संतों-महापुरुषों की शिक्षाओं से होगा समाज का उत्थान: भागो

युवा पीढ़ी को संतों और महापुरुषों की शिक्षाओं से जोड़ना समय की सबसे बड़ी जरूरत

हरिभूमि न्यूज

मिर्जापुर रोड स्थित कौशिक नगर में रविवार को संत शिरोमणि गुरु रविदास मंदिर एवं लाइब्रेरी के निर्माण की नींव विधि-विधान के साथ रखी गई। संत शिरोमणि गुरु रविदास ट्रस्ट के सानिध्य में आयोजित समारोह में सर्व समाज के लोगों ने भाग लिया और मंदिर एवं लाइब्रेरी के निर्माण में हसंसंभव सहयोग देने का संकल्प लिया। मंदिर निर्माण के लिए भागो देवी पत्नी गंगासिंह, नरवाना वाले ने मुख्य दानवीर के रूप में 2 लाख 51 हजार रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि समाजसेवी कौशल्या सिंहमार रहीं। इस अवसर पर



हिसार। गुरु रविदास मंदिर व लाइब्रेरी की नींव रखते मुख्य अतिथि।

मुख्य दानवीर भागो देवी व मुख्य अतिथि कौशल्या देवी ने कहा कि संतों और

समारोह में ये रहे मौजूद

समारोह में प्रोफेसर सतबीर, रतिराम, पवन कुमार, रामकुमार कांटीवाल, महेंद्र, रामकुमार, चरणदास, रामकिशन, मनोज कुमार, नवीन सांखला, रामचंद्र सरोहा, जयवीर सिंह, रोहतास मंगलपुरिया, राममेहर, कमबीर तालू, रिसपाल, सुरेश कुमार, एडवोकेट संतलाल, चतर सिंह, कमल सिंह, रणवीर सिंह, प्रधान डॉ. बलवान सिंह दहिया, इंद्राज भारती, मास्टर जयप्रकाश, ताराचंद, सनी रंगा, सुमित कांत, शंभू दयाल, रोशनलाल,

महापुरुषों के मंदिर केवल आस्था के केंद्र नहीं होते, बल्कि इनके साथ स्थापित होने वाले पुस्तकालय आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान, शिक्षा और जागरूकता के केंद्र बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज युवा पीढ़ी को संतों और महापुरुषों की शिक्षाओं से जोड़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। शिक्षा, संस्कार और सकारात्मक विचारों के माध्यम से ही समाज को मजबूत बनाया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी के 137वें 'मन की बात' का प्रसारण



हिसार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 137वें एपिसोड का रविवार को हिसार विधानसभा क्षेत्र के बूथ संख्या-12 पर साप्ताहिक रूप से प्रसारण सुना गया। कार्यक्रम का आयोजन सेक्टर-33 वेलफेयर सोसायटी के प्रधान एवं बूथ समिति अध्यक्ष धर्मेचंद पालू के आवास पर किया गया। इस दौरान पूर्व स्वास्थ्य एवं नागरिक उड्डयन मंत्री डॉ. कमल गुप्ता विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम में बूथ समिति के पदाधिकारियों के अलावा ओबीसी प्रमुख, बूथ पालक, पन्ना प्रमुख, कॉलोनी के गणमान्य नागरिक और बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए डॉ. कमल गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है। यह कार्यक्रम लोगों को सकारात्मक दिशा देने के साथ-साथ समाज में जनभागीदारी, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रनिर्माण की भावना को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि 'मन की बात' के माध्यम से प्रधानमंत्री देश के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लोगों और समाज के सकारात्मक प्रयासों को देश के सामने रखते हैं, जिससे अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलती है। डॉ. कमल गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 137वें एपिसोड में नशासूक्त भारत अभियान को जनआंदोलन का स्वरूप देने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि युवाओं की इस अभियान में सक्रिय भागीदारी बेहद महत्वपूर्ण है।

ब्राह्मण महासम्मेलन नवंबर में प्रदेशभर से लाखों करेंगे शिरकत

ब्राह्मण कल्याण आयोग की घोषणा लागू करे सरकार : पं. जिले सिंह

हरिभूमि न्यूज

ब्राह्मण महासभा हरियाणा की जिला स्तरीय श्रृंखला के तहत रविवार को ब्राह्मण धर्मशाला में जिला हिसार के ब्राह्मण समाज की बैठक हुई। अध्यक्षता ब्राह्मण सभा के प्रधान पं. रतन लाल शर्मा ने की, जबकि मुख्य अतिथि प्रदेशाध्यक्ष पं. जिले सिंह पिचौलिया रहे। पं. पिचौलिया ने कहा कि ब्राह्मण समाज की प्रमुख मांगों में ब्राह्मण कल्याण आयोग का गठन और भगवान परशुराम के प्राकट्योत्सव दिवस को सरकारी स्तर पर मनाना शामिल है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने 14 दिसंबर 2024 को इन मांगों को लेकर घोषणा की थी, लेकिन अभी तक इन्हें लागू नहीं किया गया है।

इससे समाज में रोष है। उन्होंने बताया कि मांगों को लेकर जल्द ही 151 सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री से मुलाकात करेगा। उन्होंने कहा कि समाज की दशा और दिशा तय करने के लिए नवंबर 2026 में विशाल ब्राह्मण महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा, जिसमें हरियाणा सहित देशभर से लाखों ब्राह्मणों के शामिल होने की संभावना है। संगठन को मजबूत करने के लिए प्रदेश, मंडल, जिला, खंड, गांव और वार्ड स्तर पर समितिगत गतिवत् कर करीब 60 हजार सदस्यों को संगठन से जोड़ने की योजना है। साथ ही 21 सदस्यीय मार्गदर्शक मंडल गठित किया जाएगा। बैठक में सत प्रमुख मांगों पर चर्चा हुई। इनमें ब्राह्मण कल्याण आयोग के गठन, भगवान

वे रहे मौजूद

महासचिव सतीश गौतम, कुलदीप भारद्वाज तथा युवा अध्यक्ष एवं उपप्रधान नरेश गौड़ ने युवाओं और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया। बैठक में पं. रतन लाल शर्मा, पृथ्वी सिंह धिराडिया, शिव शंकर शर्मा, जेपी शर्मा, कुलभूषण शर्मा, छज्जू राम शर्मा, रविंद्र साहिब, प्रकाश शर्मा, सुंदर धिराडिया, प्रवीण शर्मा, जगदीश शास्त्री, विकास शर्मा, सज्जन शर्मा और राममेहर शर्मा सहित सैकड़ों विप बंधु मौजूद रहे। परशुराम का प्राकट्योत्सव सरकारी स्तर पर मनाने, आरक्षण का लाभ गरीब एवं जरूरतमंदों को देने, जाति-धर्म के आधार पर भेदभाव करने वाले कानूनों की समीक्षा कर समान कानून लागू करने की मांग की।

आरएसएस के सम्मेलन में युवाओं ने लिया राष्ट्र निर्माण का संकल्प



उकलाना। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के छठे कार्यक्रम के तहत उकलाना खंड का युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में 160 से अधिक युवा कार्यकर्ताओं ने भागीदारी दर्ज कर राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में चक्ता के रूप में जिला सह कार्यवाह, हांसी, बलजीत सिंह ने पंच परिवर्तन विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए पंच परिवर्तन अति आवश्यक है, जिन्हें देश को आगे ले जाने में अपनी भूमिका निभा रहा है। कार्यक्रम के दौरान प्रातःकाल से युवा स्वयंसेवकों को खेलों के माध्यम से शाखा का ज्ञान करवाया गया। इस अवसर पर जिला संघ चालक महेश बंसल, जिला कार्यवाह सुरेश कुमार, खंड संघ चालक राजेंद्र शर्मा, खंड कार्यवाह हलबीर सिंह, सहायक खंड कार्यवाह सुशील गर्ग, कार्यक्रम संयोजक भीमसेन, सहसंयोजक योगेश शर्मा तथा विभाग सह नी सेवा प्रमुख सुभाष चंद्र सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लुवास में मैत्रीपूर्ण वॉलीबॉल मुकाबला विद्यार्थियों ने कर्मचारियों को 2-1 से हराया

हिसार। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर यहां

के लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) में रविवार को विद्यार्थियों और विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के बीच मैत्रीपूर्ण वॉलीबॉल मुकाबला आयोजित किया गया। रोमांचक मुकाबले में विद्यार्थियों की टीम ने कर्मचारियों की टीम को 2-1 से पराजित किया। तीनों सेटों में खिलाड़ियों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिला और निर्णायक सेट में विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मुकाबला अपने नाम किया। विश्वविद्यालय परिस्तर में लघु पशु रोग-मुक्त भवन के निवृत्त आयोजित इस मुकाबले का उद्देश्य विश्वविद्यालय समुदाय में खेल भावना, टीमवर्क, आपसी सौहार्द और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना रहा। कुलपति प्रो. डॉ. विनोद कुमार वर्मा के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में लुवास में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के साथ खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी कड़ी में आयोजित यह मैत्रीपूर्ण मुकाबला विश्वविद्यालय परिवार को खेल के माध्यम से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल रहा।



हिसार। खिलाड़ियों से परिचय लेते छात्र कल्याण निदेशक डॉ. संदीप कुमार। फोटो: हरिभूमि

मुकाबले में दोनों टीमों ने पूरे उत्साह और खेल भावना के साथ प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने पहला सेट 15-8 से जीतकर बढ़त बनाई, जबकि कर्मचारियों की टीम ने शानदार वापसी करते हुए दूसरा सेट 15-7 से अपने नाम कर मुकाबला 1-1 से बराबर कर दिया। इसके बाद निर्णायक तीसरे सेट में दोनों टीमों के बीच जबरदस्त संघर्ष देखने को मिला। अंत तक मुकाबला रोमांचक बना रहा और विद्यार्थियों ने 16-14 से तीसरा सेट जीतकर मुकाबला 2-1 से अपने नाम कर लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छात्र कल्याण निदेशक डॉ. संदीप कुमार ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि खेल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

खबर संक्षेप



बरवाला। नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत करते मुख्य अतिथि व अन्य।

रोहताश ग़ोवर तीसरी बार बने जिलाध्यक्ष
बरवाला। भवन निर्माण श्रमिक संघ संबंधित भारतीय मजदूर संघ हरियाणा का अधिवेशन हुआ। इसमें रोहताश ग़ोवर को तीसरी बार जिलाध्यक्ष बनाया गया। सीता राम नंगथला को जिला मंत्री व प्रवीण कुमारी पनिहारी को महिला विंग जिलाध्यक्ष बनाया गया है। रमेश कुमार व राहुल बिस्नोई को उपाध्यक्ष बनाया गया है। हांसी जिले की कार्यकारिणी में हांसी के अरुण दुग्गल को जिलाध्यक्ष और राममेहर हैतपुर को जिला महामंत्री तथा प्रदीप कापड़ो को कोषाध्यक्ष व रेखा रानी को जिलाध्यक्ष महिला विंग बनाया गया है। बलजीत पनिहारी को हांसी का उपाध्यक्ष बनाया गया है। इन दोनों जिलों की कार्यकारिणी के गठन के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में देवीलाल गुरान बीओसी बोर्ड के मंबर और प्रदेशाध्यक्ष रजत धीमान तथा प्रदेश महामंत्री राममेहर जांगडा उपस्थित रहे। इन नवनियुक्त पदाधिकारियों ने कहा कि उन्हें जो जिम्मेवारी पूर्ण पद सौंपा गया है। वो उस जिम्मेवारी पर खरा उतरेंगे।

लाला देवीचंद ग़ोवर निशुल्क कृत्रिम अंग निर्माणशाला बनी दिव्यांगजनों के लिए आशा और आत्मनिर्भरता का केंद्र

सितंबर के अंतिम सप्ताह में 225 दिव्यांगजनों को निशुल्क मिलेंगे लाखों की लागत के कृत्रिम अंग

हरिभूमि न्यूज ►►हिसार

हरियाणा भारत विकास फाउंडेशन द्वारा संचालित दिव्यांग पुनर्वास एवं स्वास्थ्य केंद्र, हिसार में स्थापित लाला देवीचंद ग़ोवर निशुल्क कृत्रिम अंग निर्माणशाला जरूरतमंद दिव्यांगजनों को आधुनिक कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण एवं विशेष स्पॉट उपलब्ध करवाने की दिशा में निरंतर उल्लेखनीय सेवा कर रही है। इस निर्माणशाला के मुख्य सूत्रधार हिसार के प्रसिद्ध समाजसेवी विजय ग़ोवर हैं। उल्लेखनीय है कि इस सेवा प्रकल्प के संचालन एवं जरूरतमंद दिव्यांगजनों तक निशुल्क सहायता पहुंचाने में विजय ग़ोवर एवं उनके परिवार का संपूर्ण आर्थिक सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहा है। उनके परिवार की सेवा भावना और उदार सहयोग के कारण अनेक ऐसे दिव्यांगजन, जो महंगे कृत्रिम अंग



समाजसेवी विजय ग़ोवर।

अथवा सहायक उपकरण वहन नहीं कर सकते, आज बेहतर और अधिक आत्मनिर्भर जीवन की ओर आगे बढ़ रहे हैं। लाला देवीचंद ग़ोवर निशुल्क कृत्रिम अंग निर्माणशाला के माध्यम से सितंबर के अंतिम सप्ताह में 225 दिव्यांगजनों को लाखों की लागत के कृत्रिम अंग निशुल्क प्रदान किए जाएंगे। इसके लिए कुरुक्षेत्र के लाडवा, पानीपत व हिसार में निशुल्क शिविर लगाए जाएंगे। दिव्यांग केंद्र के कार्यकारी अध्यक्ष सीए रामनिवास अग्रवाल ने बताया कि निर्माणशाला में दिव्यांग केंद्र पर नियमित रूप से आने वाले जरूरतमंदों के

दिव्यांग सेवा को मिला सहयोग
दिव्यांग केंद्र का प्रयास है कि आर्थिक अभाव के कारण कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति आवश्यक कृत्रिम अंग या सहायक उपकरण से वंचित न रहे। विजय ग़ोवर एवं उनके परिवार का निरंतर आर्थिक सहयोग इस मानवीय सेवा अभियान को मजबूती प्रदान कर रहा है और समाज के अन्य सक्षम परिवारों के लिए भी प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

लिए कृत्रिम अंग तैयार किए जाते हैं। इसके साथ ही सेरेब्रल पाल्सी (सीपी) से प्रभावित बच्चों एवं अन्य जरूरतमंद मरीजों के लिए विशेष स्पॉट सेंट्रल तथा ऑर्थोटिक उपकरण भी तैयार कर निशुल्क उपलब्ध करवाए जाते हैं। इससे उन्हें चलने-फिरने, संतुलन बनाने और दैनिक गतिविधियों में अधिक सुविधा मिलती है।

पैरलल लाइसेंस प्रणाली और अलग कृषि वितरण निगम बनाने की प्रक्रिया का विरोध, मांगें नहीं मानी तो आंदोलन

हिसार। हरियाणा सरकार एवं हरियाणा विद्युत नियामक आयोग (एचईआरसी) पर कर्मचारियों से वादाखिलाफी और विश्वासघात का आरोप लगाते हुए हरियाणा बिजली कर्मचारी एवं इंजीनियर संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने रविवार को प्रदेश के विधायकों को ज्ञापन सौंपा। मोर्चा ने

- कर्मचारियों से पैरालल लाइसेंस वादाखिलाफी का आरोप, बिजली कर्मचारी संयुक्त मोर्चा ने विधायकों को सौंपे ज्ञापन

पैरालल लाइसेंस प्रणाली को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि गुरुग्राम और नूंह को निजी बिजली कंपनी को देने के लिए पत्राचार और अन्य प्रक्रिया आगे बढ़ाई जा रही है। उन्होंने कहा कि 10 अगस्त को बिजली मंत्री अनिल विज के साथ मोर्चा की वार्ता हुई थी, जिसमें लिखित आश्वासन दिया गया था, लेकिन इसके बावजूद 26 अगस्त को नए निर्देश जारी



हिसार। विधायक रणधीर पनिहार को ज्ञापन सौंपते संयुक्त मोर्चा के पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

कर प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया। इससे कर्मचारियों में भारी रोष है। उन्होंने कहा कि मोर्चा इस प्रक्रिया का हर स्तर पर विरोध करेगा। इसी कड़ी में आदमपुर के विधायक चंद्र प्रकाश, बरवाला के विधायक रणबीर गंगवा, नलवा के विधायक रणधीर पनिहार और सावित्री ज़िंदल समेत अन्य विधायकों को ज्ञापन सौंपकर विधानसभा में कर्मचारियों की मांगों को उठाने की अपील की गई। महासचिव रविंद्र घणघस ने कहा कि पैरालल लाइसेंस प्रणाली के खिलाफ मुख्यमंत्री और बिजली मंत्री को पत्र भेजा जाएगा।

संस्कारों के जागरण की शाला है ज्ञानशाला : साध्वी

हांसी। तैरापथ भवन में रविवार को साध्वी मान्यवती के आनिवेश में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। आयोजन सभा प्रधान सुभाष जैन की अध्यक्षता में ज्ञानशाला प्रमारी कुमुद जैन के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए साध्वी मान्यवती ने कहा कि ज्ञानशाला बच्चों के भीतर संस्कार भरने की संस्था है जिसमें कि बच्चों को अहिंसा, एकता और सत्यता का भाव भरा जाता है और इसके साथ ही कुसंस्कारों से दूर रहने का संदेश दिया। प्रधान सुभाष जैन ने कहा कि सत्य समाज के निर्माण के लिए बच्चों का संस्कार शील होना बेहद जरूरी है और इसी हेतु तैरापथ समाज ज्ञानशाला का आयोजन किया गया।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फ़ोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ेंगे: प्रो. विजय कुमार

शोध और शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों तक ले जाना लक्ष्य



हिसार। नवनियुक्त कुलगुरु प्रो. विजय कुमार का स्वागत करते कुलसचिव डा. विजय कुमार।

नवनियुक्त कुलगुरु का गर्मजोशी से स्वागत

कुलसचिव डा. विजय कुमार ने नवनियुक्त कुलगुरु का स्वागत करते हुए कहा कि प्रो. विजय कुमार सकारात्मक व्यक्तित्व के धनी हैं और सभी को साथ लेकर चलने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में गुजविप्रीवि की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान और अधिक मजबूत होगी। उन्होंने हरियाणा सरकार का भी आभार जताया कि विश्वविद्यालय के नेतृत्व को जिम्मेदारी सकारात्मक सोच रखने वाले अनुभवी शिक्षाविद को सौंपी गई है।

विजय कुमार ने सबसे पहले गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में स्थित गुरु जम्भेश्वर जी महाराज की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद पूर्व कुलगुरु प्रो. नरसी राम बिस्नोई ने उन्हें कुलगुरु का कार्यभार सौंपा। कुलगुरु कार्यालय के कमेटी हॉल में

23 वर्षों का उच्च स्तरीय शैक्षणिक अनुभव

प्रो. विजय कुमार को उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में 23 वर्षों का अनुभव है। वे इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर तथा एलएन हिंदू कॉलेज के प्राचार्य के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। इसके अलावा आईकेजी पंजाब टेक्निकल यूनिवर्सिटी, मोहाली में कुलसचिव और पंजाब कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, मोहाली में प्रोफेसर के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। सॉलिड स्टेट डिवाइसेज, सोलर सेल और नैनोटेक्नोलॉजी उनके विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्र हैं। उनके 105 शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नल, कॉन्फ्रेंस तथा सेमिनार में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा उनका ऑस्ट्रेलियन इन्वैशेन पेटेंट भी फाइल हो चुका है। उन्होंने दो प्रायोजित परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूरी की हैं तथा एक अन्य परियोजना प्रस्तुत की है। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय

शिक्षकों-कर्मचारियों ने कुलगुरु का किया स्वागत

गजुटा प्रधान इंजीनियर विनोद गोयल ने भी प्रो. विजय कुमार का स्वागत किया। स्वागत सभा में उच्चतर शिक्षा परिषद के सदस्य डा. सतरूप दांडा, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा के कुलसचिव डा. सुनील कुमार, चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय जींद के परीक्षा नियंत्रक डा. राजेश बंसल, सीआरएम जाट महाविद्यालय हिसार के डा. सुरेंद्र बाजिया सहित गुजविप्रीवि के अनेक शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने विचार रखे।

आयोजित स्वागत सभा का संचालन कुलसचिव डा. विजय कुमार ने किया। शिक्षकों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए प्रो. विजय कुमार

ने कहा कि सभी को उसी उत्साह के साथ कार्य करना चाहिए, जिस उत्साह के साथ उन्होंने नौकरी के पहले दिन काम शुरू किया था।



बरवाला। नगर परिषद और फायर ब्रिगेड के कर्मचारी सरकार के खिलाफ रोष व्यक्त करते हुए।

नगर परिषद की हड़ताल व धरना प्रदर्शन जारी

बरवाला। सर्व कर्मचारी संघ के आह्वान पर नगर परिषद बरवाला में अपनी अनेक मांगों को लेकर 25 वें दिन हड़ताल व धरना प्रदर्शन जारी रहा। इस हड़ताल व धरने प्रदर्शन की अध्यक्षता मुकेश कुमार ने की और मंच संचालन राजेश कुमार ने किया। इस हड़ताल व धरने प्रदर्शन में इन गुरुखाप कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और सरकार को गलत नीतियों की कड़े शब्दों में निंदा की। इस हड़ताल व धरना प्रदर्शन में फायर ब्रिगेड और नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों ने बढ़ बढ़ करके भाग लेकर सरकार के खिलाफ रोष व्यक्त किया। इस अवसर पर विकी, सोनू, विनोद, विजय, राजकुमारी, सुनीता, रेखा व अति आदि मौजूद रहे।

निजीकरण के खिलाफ संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने विधायकों को सौंपे ज्ञापन

हांसी। हरियाणा बिजली कर्मचारी एवं इंजीनियर संयुक्त संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर रविवार को बिजली कर्मचारियों और विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने हांसी के विधायक विनोद भयाना तथा नारनौद के विधायक जस्सी पेटवाड़ को उनके आवास पर ज्ञापन सौंपकर बिजली क्षेत्र में प्रस्तावित निजीकरण का विरोध

- विधानसभा में बिजली व नगरपालिका कर्मचारियों ने विधायकों से की मांगें मजबूती से उठाने की अपील

आम जनता के हितों में मजबूती से पक्ष रखने की मांग की राज्य कैशियर सुरेंद्र यादव ने बताया कि बिजली मंत्री अनिल विज और बिजली निगमों की मैनेजमेंट ने कर्मचारियों से विश्वासघात और वायदाखिलाफी की है। उन्होंने कहा कि बिजली मंत्री ने 10 अगस्त को कर्मचारी प्रतिनिधियों को लिखित आश्वासन दिया था, लेकिन महज 15



हांसी। विधायक विनोद भयाना को ज्ञापन सौंपते संयुक्त संघर्ष मोर्चा के कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

दिन बाद ही निजी लाइसेंस की प्रक्रिया को तेज गति से आगे बढ़ाया जा रहा है। इसे कर्मचारी किसी भी सूत्र में स्वीकार नहीं करेंगे। कर्मचारी नेताओं ने बताया कि 31 अगस्त को प्रदेशभर में सभी सब-डिवीजनों पर पैरलल लाइसेंस प्रणाली की प्रतियां जलाकर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। इसके साथ ही नगरपालिका संघ और अनिशमान कर्मचारी संघ हरियाणा के जारी धरने पर पहुंचकर कर्मचारियों के आंदोलन का समर्थन किया जाएगा।



हिसार। कार्यक्रम में प्रस्तुति देने विद्यार्थी।

फोटो: हरिभूमि

कानूनी साक्षरता प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

- विजेता विद्यार्थी 8 सितंबर को जिला स्तरीय प्रतियोगिता में लेंगे हिस्सा

हरिभूमि न्यूज ►►हिसार

विद्यार्थियों को कानून के प्रति जागरूक करने और उनमें जिम्मेदार नागरिक बनने की भावना विकसित करने के उद्देश्य से खंड हिसार द्वितीय की खंड स्तरीय कानूनी साक्षरता प्रतियोगिता का आयोजन जगन्नाथ आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में किया गया। प्रतियोगिता में खंड के विभिन्न विद्यालयों से पहुंचे विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का समन्वय नोडल अधिकारी विनोद धवन ने किया, जबकि अध्यक्षता विद्यालय की प्राचार्या सुमन गर्ग ने की। खंड शिक्षा अधिकारी राकेश चराया मुख्य अतिथि तथा जिला गणित विशेषज्ञ संदीप सिन्धु विशिष्ट अतिथि के रूप में

जागरूक नागरिक बनें

मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी राकेश चराया ने कहा कि कानूनी साक्षरता का अर्थ केवल कानून की जानकारी हासिल करना नहीं है, बल्कि अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग होना भी है। विद्यार्थियों को स्वयं कानूनी प्रावधानों की जानकारी हासिल करने के साथ अपने आसपास के लोगों की भी उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जागरूक नागरिक ही समाज और राष्ट्र को मजबूत बनाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

उपस्थित रहे। मंच संचालन जिला प्रशिक्षण संस्थान, हिसार की हिंदी प्रवक्ता नीतिका ने किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने निबंध लेखन, स्लोगन लेखन, भाषण, क्विज, वाद-विवाद, स्किट, कविता पाठ, ऑन द स्पॉट पेंटिंग, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन और डॉक्यूमेंट्री फिल्म सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।



हिसार। ओशो ध्यान उपवन में मेंडिटेशन करवाते स्वामी संजय।

फोटो: हरिभूमि

कृष्ण प्रेम और ध्यान का महासत्संग

स्वामी संजय ने बताया कि 2 सितंबर को प्रातः 6 बजे प्रातःकालीन भ्रमण की व्यवस्था रहेगी। 4 सितंबर को साधकों द्वारा जम्माधर्मी महोत्सव मनावते हुए श्रीकृष्ण लीला का मंचन किया जाएगा। 6 सितंबर को ओशो के अजुन स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक श्रीकृष्ण-प्रेम और ध्यान का अद्भुत संतम विषय पर महासत्संग करेंगे। इसके उपरान्त दोपहर 1 बजे से सभी साधकों के लिए लंगर प्रसाद की व्यवस्था रहेगी। शिविर में हिस्सा लेने वाले साधकों को ओशो ध्यान उपवन के प्राकृतिक व शांत वातावरण का आनंद उठाने का भी अवसर मिलेगा।

ओशो ध्यान उपवन में 1 से 6 सितंबर तक चलने वाले शिविर में विभिन्न राश्यों से सैकड़ों साधक पहुंचेंगे। इन

साधकों के आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था ओशो ध्यान उपवन द्वारा की जाएगी।



बरवाला। रक्तदाता का उत्साह बढ़ाती संचालिका बहन इंद्रा एवं अन्य।

फोटो: हरिभूमि

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय बरवाला में रक्तदान शिविर

बरवाला। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 19वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में चलए जा रहे रक्तदान महाअभियान के तहत प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, बरवाला में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। शिविर में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए 40 यूनिट रक्तदान किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संचालिका बहिन इंद्रा ने कहा कि रक्तदान महादान है। हमारे द्वारा दिया गया रक्त किसी जरूरतमंद को नई जिंजी देने में सहायक बनता है। उन्होंने कहा कि रक्तदान को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है, ताकि जरूरत के समय किसी मरीज को रक्त की कमी का सामना न करना पड़े।



हिसार। विजेता खिलाड़ियों के सम्मान समारोह में उपस्थित अतिथिगण और एसोसिएशन के पदाधिकारी।

फोटो: हरिभूमि

जिला गतका चैंपियनशिप में 60 खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

- विजेता खिलाड़ी 5-6 सितंबर को रतिया में होने वाली राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में लेंगे हिस्सा

प्रतियोगिता में चयनित खिलाड़ी 5 और 6 सितंबर 2026 को रतिया (फतेहबाद) में होने वाली राज्य स्तरीय गतका चैंपियनशिप में हिसार जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रतियोगिता में जश्न सिंह और गुरुद्वान सिंह ने स्टेट बॉडी गतका की ओर से ऑफिशियल की भूमिका निभाई, जबकि सुरेश और रेवू पुनिया ने सहायक ऑफिशियल के रूप में सेवाएं दीं।

दस हजार पौधों का लक्ष्य

ग्रीन ग्लोबल ग्रुप के सदस्य हरिसिंह का कहना है कि जुगलान गांव में कम से कम 10 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य है और लगभग 2 हजार पौधे लगा दिए गए हैं। पिछले सप्ताह ही ग्रुप के सदस्यों ने गांव वासियों के साथ मिलकर लगभग 500 पौधे लगाए थे। पर्यावरण को साफ सुथरा बनाए रखने के लिए गांव वासियों और शहर वासियों की बागडोर अपने हाथ में लेनी होगी। सहजन 25, शहतूत 25, अमरूद 25, जामुन 53, मोठा नीम 16, बालम खीरा 10, गुलमोहर 75, पीली कनेर 50, लाल कनेर 75, बकान 50 आदि शामिल हैं।



हिसार। जुगलान में पौधारोपण करते ग्रीन ग्लोबल ग्रुप के सदस्य व गांव के गणमान्य लोग।

फोटो: हरिभूमि

पौधे लगाकर रिकार्ड बनाया है। सभी पौधे ग्रीन ग्लोबल ग्रुप हिसार द्वारा अपनी नर्सरी में तैयार किए गए। इनमें नीरज ढींगरा और सुधीर मोंगिया का

सहयोग अनुकरणीय है। ग्रुप के सदस्य हरि सिंह ने बताया कि जो पौधे गांव जुगलान की गौशाला में लगाए गए हैं उनमें आम 50, आवंला 50, नीम 50,

हरिभूमि न्यूज ►►हिसार

स्वच्छता और पर्यावरण को हरा-भरा रखने की दिशा में पिछले आठ वर्षों से काम कर रहे ग्रीन ग्लोबल ग्रुप ने अब अपने शहर के साथ साथ गांवों में भी पर्यावरण की अलख जगा दी है। जीवन का आधार है अपने आसपास साफ-सफाई और शुद्ध पर्यावरण। इसी ध्येय को अपनाने हुए ग्रीन ग्लोबल ग्रुप के सदस्यों ने अपनी उपलब्धियों में एक और उपलब्धि शामिल करते हुए निकटवर्ती गांव जुगलान की गौशाला में गांव वासियों के सहयोग से फलदार पौधों का बाग बना दिया है। सभी ने मिलकर रविवार को छुट्टी के दिन 555